thearyasamaj.org

ओ३म्

16th October 2014

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

KAILASH SATYARTHI HONOURED WITH WORLD NOBEL PEACE PRIZE

A CRUSADER AGAINST CHILD SLAVERY

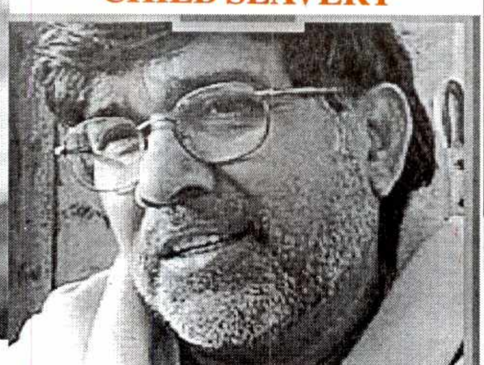

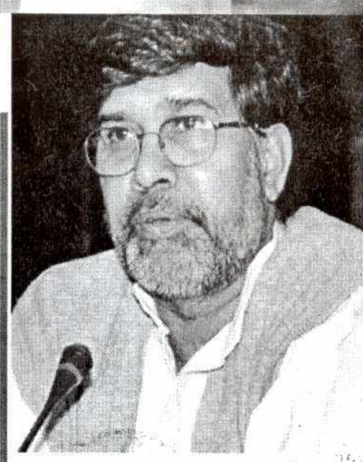

thearyasamaj.org

Saat pheras Arya Samaj way

■ Partners from other religions converting willingly for Arya Samaj weddings

DC CORRESPONDENT
HYDERABAD, SEPT. 17

While much is being said about Love Jihad, Hyderabad is showing a different trend altogether. More and more people from different religions and from different countries are converting to Hinduism for their Hyderabadi partner and are getting married as per Hindu customs at various Arya Samaj branches in the city.

Over 25 such couples got married in the last eight months. Most of them are students. They include a few Americans, Russians, Australians and even a Chinese national who converted to Hinduism for their partners.

There were also three weddings wherein neither of the partners were Hindu, but willfully changed their religion for personal reasons like getting quick marriage certificates and moving out of the country.

Most of the marriages, however, were not for quick marriage certificates, but a conscious decision by the Hindu partner to get married according to Hindu rituals and in his or her own city.

Vitthal Rao Arya, president of the State Council of Arya Samaj, said, "We have had about 25 to 27 such couples this year. This is a new trend. As per our principles, we perform weddings only for people following Hinduism. But in some cases, when the girl or the boy is from another religion, we tell them what our procedures are and that we cannot perform the wedding unless both are majors and Hindus.

"We do not immediately allow conversion. We counsel them and ask them if they are sure of their decision and only then we go ahead," Mr Arya said.

The couples are mandated to submit an affidavit, a medical certificate, age proofs, address proofs, passport photos and three witnesses each with their address proofs.

"Only after all these documents verified do we perform the wedding. After the wedding, an Arya Samaj certificate is issued. This is valid across the country and even for applying for a passport. But for a visa, they must submit this to a registrar and in about a week, a marriage certificate is issued. A normal registry marriage will take a month and it is also a dull event. In this case, their friends come, we give them the space for the rituals and it's like a celebration,"

A file photo of the Arya Samaj mandir in Secunderabad.

HAPPILY MARRIED

An Arya Samaj marriage certificate is issued immediately and is valid across the country

■ Over 25 such couples got married in the last eight months. Most of them are students. They include a few Americans, Russians, Australians and even a Chinese national who converted to Hinduism for their partners

As per our principles, we perform weddings only for people following Hinduism. But in some cases, when the girl or the boy is from another religion, we tell them what our procedures are and that we cannot perform the wedding unless both are majors and Hindus

— VITTHAL RAO ARYA,
President, Arya Pratinidhi Sabha

KIDS LEAVE PARENTS IN THE LURCH

DC CORRESPONDENT
HYDERABAD, SEPT. 17

Parents in many cases have said they go through humiliation as their children seek police support or go to the media when they oppose their decision regarding marriage. They said that children must at least be answerable to their parents.

"My daughter got engaged and just a couple of days before the wedding, she married someone else. We were answerable to so many people. If there was at least some intimation, we would not bother her. The worst part is that now she is divorced and back home," said a father.

Another groom's uncle narrated another such incident, when his nephew walked away from his own reception and got married to someone else. "Why do injustice to the girl who married him? She just broke down on the stage."

Purnima Nagaraja, consultant psychiatrist, Dhriti Psychological Wellness Centre, said, "Parents are always overprotective and only want the best. There must be regular communication between children and parents."

thearyasamaj.org

NOBEL PEACE PRIZE AWARDEE
KAILASH SATYARTHI

HAS HIS CLOSE RELATIONS WITH VITHAL RAO ARYA AND HIS ARYA SAMAJI FRIENDS. SOME OF THE PHOTOS OF SATYARTHI JI PARTICIPATING IN VARIOUS PROGRAMMES ON ELIMINATION OF CHILD LABOUR AND EDUCATION TO ALL ORGANISED BY SACCS SOUTH INDIA CONVENOR VITHAL RAO ARYA AND CHAIR-PERSON OF ARYA SAMAJ BONDED LABOUR CHILD LABOUR FRONT

Satyarthi ji with Vithal RaoArya ji and Radheshyam Shukla

Satyarthi ji with Puli Late Veeranna Ex- MLA

Satyarthi ji with V Rao Arya ji and P.Chandrashekhar former Minister

Satyarthi ji with Sri Potturi Venkateshwar Rao, Venkat Reddy of MV Foundation

Satyarthi ji with V Rao Arya ji and P.Chandrashekhar former Minister

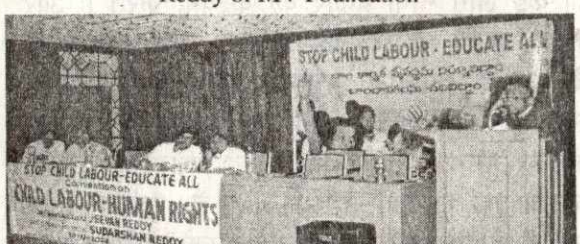

Satyarthi ji with V Rao Arya ji and sri Jaipal Yadav former MLA

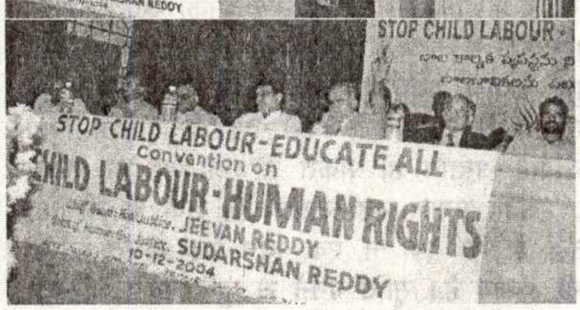

Satyarthi ji with Justice Jivan Reddy, Justice Sudarshan Reddy, Keshav Rao Jadhav and Vithal Rao Arya

thearyasamaj.org

सष्टि, मानव आदि प्राणियों के शरीर और मूल वैदिक संस्कष्त भाषा ईश्वरकष्त हैं––

'भाषा, भाषा से बनती है और आदि व मूल भाषा ईश्वर से प्राप्त होती है'

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज संसार में जितनी भी भाषायें हैं इनका अस्तित्व अपनी पूर्व भाषा में अपभ्रंषों, विकारों, सुधारों व भौगोलिक कारणों से हुआ है। हम बचपन में जो भाषा बोलते थे उसमें और हमारे द्वारा वर्तमान में बोली जाने वाली भाषा में शब्दों के प्रयोग व उच्चारण की दृष्टि से काफी अन्तर आया है। कुछ भाषायें हमने विद्यालयों में या पुस्तकों आदि से भी सीखी हैं। जिस या जिन भाषाओं को सीखा है उनका भी पहले से अस्तित्व है। अब हम उस भाषा पर विचार करते हैं जो वर्तमान भाषाओं का कारण है। हमें यह तथ्य ज्ञात होता है कि आज की भाषाओं के पूर्व स्वरूप को हमारे पूर्वजों ने अपने समय की भाषा में कुछ अपभ्रंशों, विकारों व उनमें सुधार करके अस्तित्व प्रदान किया था। उन्होंने अपने समय में पहले से विद्यमान भाषा के बिना ही उन भाषाओं को पहली बार स्वयं नहीं बनाया था। इस प्रकार से यदि पीछे की ओर चलते जायेंगे तो हम सृष्टि की आदि में पहुंच जायेंगे। सृष्टि की आदि में यह एक और समस्या आयेगी कि सबसे पहले जो मनुष्य उत्पन्न हुए, उनके माता–पिता तो रहे नहीं होंगे फिर उनका जन्म कैसे हुआ होगा, यह प्रश्न तो बहुत अच्छा है परन्तु इस प्रश्न के लोगों के भिन्न–भिन्न उत्तर होते हैं। कई लोग नाना प्रकार की कल्पना करते हैं और **हमारे ऋषि कोटि के विद्वान जन कहते हैं कि आदि कालीन मनुष्य अमैथुनी सृष्टि में पैदा हुए थे।** यदि मनुष्य को कुछ देर के लिए छोड़कर हम अन्य प्राणी – पशु व पक्षियों पर विचार करें तो वहां भी यही समस्या आती है। सबका उत्तर एक ही है कि अमैथुनी सृष्टि जिसको सर्वव्यापक व सृष्टिकर्ता ने कार्य रूप में अंजाम दिया। **यह अमैथुनी सृष्टि होती क्या है? यह बिना माता–पिता के सन्तानों के जन्म को कहते हैं। बिना माता–पिता के क्या सन्तान हो सकते हैं? जी हां, हो सकते हैं, इसका प्रमाण यह संसार है। तर्क से भी यह सिद्ध है कि एक न एक दिन यह जगत, सृष्टि बनी अवश्य है। सृष्टि बनने से पूर्व इसका अस्तित्व नहीं था। जब अस्तित्व नहीं था तो बनायेगा कौन? इसका उत्तर है कि किसी एक सत्य, चित्त, आनन्दयुक्त, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, अनादि, अजन्मा, अमर, सृष्टि रचना की अनुभवी सत्ता ने ही इस संसार को बनाया है।** यही उत्तर हमें वेदों से मिलता है कि एक ईश्वर है जिसमें यह सभी गुण है और वही इस सृष्टि को बनाता है और आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में मनुष्यों सहित सभी प्राणियों को उत्पन्न करता है। यह उत्तर पूर्णतः वैज्ञानिक उत्तर है। यदि वैज्ञानिक कहे जाने वाले लोग इसे स्वीकार न करें तो इसका अर्थ यह है कि उन्हें ईश्वर व जीव का ज्ञान नहीं है जबकि इनकी सत्ता यथार्थ है। कुछ समय लगेगा और अन्त में उनका यही निष्कर्ष होगा क्योंकि सभी अनुमान, कल्पनायें, मान्यताओं, सिद्धान्तों व थ्योरियों पर विचार किया जा चुका है और ईश्वरेतर कोई भी कल्पना व विचार सन्तोषजनक नहीं मिला है। ईश्वर, जीवात्मा व कारण प्रकृति –– अनादि, नित्य, सत्य, अजर, अमर तत्व हैं, इनकी न तो उत्पत्ति होती है और न ही नाश होता है। विज्ञान भी इस अमरता के सिद्धान्त को मानता है। ईश्वर, जीवात्मा व कारण प्रकृति अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण चर्म चक्षुओं से देखे नहीं जा सकते। इस न दिखने के कारण ही विज्ञान इनके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। कारण प्रकृति की कार्य अवस्था क्योंकि स्थूल है और वह आंखों से दिखाई देती है, इसलिये विज्ञान व वैज्ञानिकों को वह स्वीकार्य है। ईश्वर चेतन तत्व है अर्थात् वह हमारी आत्मा जैसा हमसे कहीं बड़ा, अनन्त परिमाण वाला है अर्थात् सर्वव्यापक व निराकार है। इसके साथ ही ईश्वर व जीवात्मा के प्रकृति के मूल स्वरूप से भी अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण इन दोनों पदार्थों का आंखों से दिखाई देना सम्भव नहीं है। आंखों का काम तो स्थूल पदार्थों को देखना है अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थों को नहीं। जब हम परमाणु व अणु जो कि प्रकृति के विकार हैं व मूल प्रकृति से स्थूल हैं, उन्हीं को नहीं देख पाते तो परमाणु व प्रकृति से भी सूक्ष्म पदार्थ ईश्वर व जीवात्मा

thearyasamaj.org

NOBEL PEACE PRIZE AWARDEE
KAILASH SATYARTHI

HAS HIS CLOSE RELATIONS WITH VITHAL RAO ARYA AND HIS ARYA SAMAJI FRIENDS. SOME OF THE PHOTOS OF SATYARTHI JI PARTICIPATING IN VARIOUS PROGRAMMES ON ELIMINATION OF CHILD LABOUR AND EDUCATION TO ALL ORGANISED BY SACCS SOUTH INDIA CONVENOR VITHAL RAO ARYA AND CHAIR-PERSON OF ARYA SAMAJ BONDED LABOUR CHILD LABOUR FRONT

Satyarthi ji with Justice Jivan Reddy, Justice Sudarshan Reddy, Keshav Rao J

Satyarthi ji in a rally organised at Hyderabad against child labour along with workers

Satyarthiji praising Dayanand Vidya Mandir HS Narayan-pet Girl Behind Arya ji and Krishna Bhagavan HM

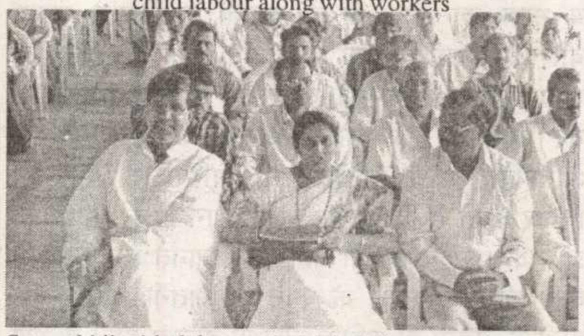
Satyarthi ji with delegates in Mahabubnagar meeting in Shiksha Yatra

Satyarthi ji with Vithal rao Rao Arya in Shiksha Yatra

Satyarthi ji with Vithal rao Rao Arya in Shiksha Yatra in Marikal Mahabubnagar

Satyarthi ji speaking in Saccs 2nd Convention Hyderabad

Prof. Hargopal speaking in Saccs 2nd Convention Hyderabad Satyarthi ji sitting

thearyasamaj.org

को कदापि नहीं देख सकते। हां, विवेक से इन्हें जाना जा सकता है और यही इनको देखना कहलता है। ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व से इनकार करना, यह बुद्धि की संकीर्णता व घोर अज्ञानता है। **इस ब्रह्माण्ड और प्राणियों के शरीरों को देख कर ईश्वर व जीवात्मा का अस्तित्व निभ्रान्त रूप से सिद्ध है।**

हम जब सषष्टि के आरम्भ में पहुंचते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि आरम्भ में ईश्वर ने अमैथुनी सषष्टि की थी जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। ईश्वर ने ही इस चेतनारहित जड़ ब्रह्माण्ड तथा चेतनायुक्त प्राणी जगत को बनाया है। प्राणी जगत में सभी प्राणियों की आंखे, मुंह, वाणी, जिह्वा, श्रोत्र या कान के साथ शरीर के अन्दर बुद्धि भी बनाई है जो सत्य व असत्य व करणीय व अकरणीय का विवेचन करती है। **जो सत्ता अदष्श्य रहकर ब्रह्माण्ड व मनुष्यों के शरीर बना सकती है वह सत्ता मनुष्य को बोलने व भाषा का ज्ञान भी दे सकती है जिससे मनुष्य बोलने में समर्थ होता है। यदि ऐसा न होता तो शायद् ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियों की रचना न की होती जिसमें कान व मुंह के अतिरिक्त अन्य इन्द्रियां भी सम्मिलित हैं।** अब विचार करते हैं कि आत्मा में विद्यमान ईश्वर, भाषा का ज्ञान करा सकता है या नहीं? हम जानते हैं कि बोलने वाले की सुनने वाले के कान से जितनी अधिक दूरी होती है, उतना ही अधिक जोर से बोलना होता है और यदि बोलने वाला कान में बोले तो बहुत धीरे से बोलने पर भी व्यक्ति सुनकर समझ लेता है। बोलना तब होता है जब बोलने वाला और सुनने वाला दोनों अलग–अलग हैं। **अब यदि बोलने वाला आत्मा के भीतर है तो बोलने की आवश्यकता नहीं है।** आत्मा में उसके द्वारा प्रेरणा कर देने मात्र से ही पहले आत्मा को ज्ञान होता है और ज्ञान का उपयोग कर मनुष्य भाषा को बुद्धि व मन के सहयोग से मुंह द्वारा उच्चारित कर सकता है। हमें जब कुछ बोलना होता है तो उसमें हम अपनी आत्मा, मन व बुद्धि के साथ मुंह का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार आत्मा में उपस्थित यदि ईश्वर ज्ञान प्रदान करता है तो आत्मा से वह मन को, बुद्धि को प्राप्त होकर मुख की वाणी द्वारा उच्चारित हो सकता है। इस बात को हमें जानना व समझना है। आत्मा में विद्यमान वा उपस्थित ज्ञान को वाणी द्वारा व्यक्त करना वा बोलना सम्भव है। यह असम्भव नहीं है। ऐसा ही सषष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सषष्टि में हुआ था या हुआ होगा। ईश्वर ने आदि सषष्टि में प्रथम चार ऋषियों की आत्माओं में वेदों का ज्ञान, भाषा ज्ञान सहित दिया था और बोलने के की प्रेरणा भी ईश्वर ने ही की थी। **हम जानते हैं कि ज्ञान का आधार भाषा होती है। यदि भाषा न हो तो ज्ञान हो ही नहीं सकता।** वेदों का ज्ञान भी संस्कष्त भाषा में है और इस कारण सस्कष्त का ही ज्ञान ईश्वर ने सषष्टि के आरम्भ में कराया था। यह सम्भावना है कि भाषा का ज्ञान अर्थात् बोलने के लिए भाषा का ज्ञान तो सभी अमैथुनी सषष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को कराया गया था। इसका कारण हमारा यह चिन्तन है कि यदि ईश्वर सभी को बोलना न सिखाता तो हम ऋषियों से ज्ञान भी प्राप्त नहीं कर सकते थे। पहले भाषा पढ़ते जिसमें काफी समय लगता। सम्भवतः कामचलाऊ भाषा के ज्ञान के लिए एक–दो सप्ताह तो लग ही जाते। इस अवधि में मनुष्य अपना सामान्य व्यवहार कैसे करते? इसका उत्तर नहीं मिलता है। क्या बिना भाषा के ज्ञान के मनुष्य दो–चार दिन भी अपना निर्वाह कर सकते हैं, वह भी तब जब उनका पालन करने के लिए उनके माता–पिता या कोई अभिभावक न हों। हमें लगता है कि यह सम्भव नहीं है। अतः यह स्वीकार करना पड़ता है कि ईश्वर ने जब मनुष्यों को जीवित जागष्त बना दिया तो उनके क्रियाशील होते ही उन्हें परमात्मा ने भाषा व सामान्य व्यवहार का ज्ञान भी दिया।

भाषा के विषय में हमारा चिन्तन बताता है कि सषष्टि के आरम्भ में जब मनुष्य उत्पन्न हुए तो उन्हें बोलने के लिए भाषा की आवश्यकता थी। उस समय यदि ईश्वर उन्हें भाषा का ज्ञान न कराता तो वह स्वयं व कालान्तर में भाषा को उत्पन्न या उसकी रचना नहीं कर सकते थे। इसका कारण है कि भाषा के लिए वाक्य, उससे पूर्व शब्द, शब्द से पूर्व अक्षर या सभी प्रकार की ध्वनियों के लिए एक एक अक्षर व उन ध्वनियों को जोड़ने के लिए उन ध्वनियों के संकेतक अक्षर व मात्राओं की न्यूनतम आवश्यकता होती है। क्या वह मनुष्य व मनुष्य समूह जो भाषा व ज्ञान से पूर्णतः शून्य हैं, अक्षर व शब्दों की रचना कर सकते हैं? इसके सभी पहलुओं पर विचार व चिन्तन करने पर ज्ञात होता है कि मनुष्यों के लिए यह सम्भव नहीं है। इसका कारण यह है कि अक्षरों को निर्धारित करने के लिए भी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है और क्योंकि आदि काल में अमैथुनी मनुष्यों को भाषा का ज्ञान नहीं है, तो वह अक्षरों के निर्धारण का कार्य कदापि नहीं कर

शेष पृष्ठ ९ पर

thearyasamaj.org

बौद्ध जैनमत, स्वामी शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द के कार्य

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महाभारत काल के बाद देश–विदेश में सर्वत्र अज्ञान फैल गया था। शुद्ध वैदिक धर्म शुद्ध न रह सका और उसमें अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां आदि अनेक हानिकारक मत व बातें सम्मिलित हो गयीं। वेद के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को पंच–महायज्ञों का करना अनिवार्य था। जिसमें प्रथम ईश्वरोपासना तथा उसके पश्चात दैनिक अग्निहोत्र का विधान था। इस अग्निहोत्र के विस्तार – गोमेध, अजामेध, अश्वमेध ा आदि अनेक यज्ञ थे। मध्यकाल में विद्वानों के वेद मन्त्रों के गलत अर्थ व व्याख्याओं से यज्ञों में पशुओं का वध होने लगा और उनके मांस से यज्ञों में आहुतियां दी जाने लगीं। वेदों के अनुसार हमारा समाज गुण, कर्म व स्वभावों के अनुसार चार वर्णों में विभक्त था। महाभारत के पश्चात मध्यकाल में इन वर्णों को गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर न मानकर जन्म पर आधारित माना जाने लगा था। कालान्तर में एक वर्ण में ही अन्म के आधार पर अनेक जातियों की रचना हुई और लोग परस्पर, जो वेदों के अनुसार समान थे, उनमें छोटे–बड़े व ऊंच–नीच का भेदभाव उत्पन्न हो गया। स्त्री व शूद्रों को वेदों के अध्ययन से वंचित कर दिया गया। महाभारत से पूर्व वैदिक काल में सबके लिए अनिवार्य गुरूकुल की शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त हो गई। महाभारत के बाद अपवाद स्वरूप ऐसे कम ही उदाहरण होंगे जहां सभी वर्णों के लोग आचार्य से वेदों का अध ययन कर पाते थे। स्त्रियों की शिक्षा का कोई गुरूकुल या शिक्षा केन्द्र तो सन् 1825 व महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार काल में देश व विदेश में कही अस्तित्व में नहीं था। **एक प्रकार से गुरूकुल व्यवस्था का ध्वस्त होना और चार वर्णों में समानता समाप्त होकर विषमता का उत्पन्न होना ही देश की पराधीनता और सभी अन्धविश्वासों व कुरीतियों का कारण था।** ऐसे समय में कि जब सामाजिक असामनता चरम पर थी, यज्ञों में हितकारी निर्दोष व मूक पशुओं को मार कर खुलकर हिंसा की जाती थी, उनके मांस से यज्ञ किए जाते थे और मांसाहार किया जाता था, तब भगवान बुद्ध का आविर्भाव हुआ। उन्होंने पशु हिंसा और सामाजिक असामनता का विरोध किया। उन्हें बताया गया कि पशु हिंसा का विधान वेदों में है। इस पर उनका उत्तर था कि ऐसे वेद जो पशु हिंसा का विधान करते हैं, वह अमान्य हैं। उन्हें बताया गया कि वेदों की रचना तो साक्षात् ईश्वर से हुई है जिसने यह सारा संसार बनाया है, तो इस पर उन्होंने कहा कि मैं ऐसे ईश्वर को भी नहीं मानता। **भगवान बुद्ध पूर्ण अहिंसक व शाकाहारी थे।** पशुओं की हिंसा और हत्या से उनको महर्षि दयानन्द के समान आत्मिक दुःख होता था। वह मानव हितकारी अनेकानेक विषयों के ध्यान व चिन्तन में संलग्न रहते थे। लोगों को उनकी यह बातें पसन्द आई। लोग उनके अनुयायी बनने लगे। उनकी शिष्य मण्डली बढ़ती गई और उनके द्वारा प्रचार से देश व विश्व में उनके अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक हो गई। बौद्ध एवं जैन मत ने ईश्वर के अस्तित्व व उसकी उपासना का त्याग कर दिया था। यह सत्य का' अपलाप था। ऐसी स्थिति का होना वेदानुयायियों के लिए चिन्ता का विषय बन गया। इसकी एक प्रतिकिया यह हुई कि बौद्धों व जैनियों की देखा–देखी वेद मतानुयायियों = आर्यो में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन हो गया। एक के बाद एक अन्ध विश्वासों में वृद्धि होती रही और अतीत का वैदिक धर्म कालान्तर में वेदों के विपरीत कुछ वैदिक व कुछ अवैदिक अथवा पौराणिक मान्यताओं का मत बन कर रह गया।

यह सर्व विदित है कि भगवान बुद्ध और जैन मत के प्रवर्तक स्वामी महावीर ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे जिसकी चर्चा हमने उपर्युक्त पंक्तियों में भी की है। उन्होंने–अपनी अपनी कल्पायें की और उसी पर उनका मत स्थिर हुआ। ऐसा होने पर नास्तिकता के बढ़ने व धर्म–अर्थ–काम व मोक्ष के बाधित होने से वैदिक मत के शुभ चिन्तक व उच्च कोटि के ईश्वर भक्त विद्वानों में चिन्ता का वातावरण बन गया। ऐसे समय में एक दिव्य पुरूष स्वामी शंकराचार्य जी का

thearyasamaj.org

आविर्भाव होता है। वह भारत के दक्षिण प्रदेश में जन्में और उन्होंने अनेक वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन किया जिससे वह अपने समय के सबसे अधिक तार्किक विद्वान तथा वेदान्त, गीता व उपनिषदों के सबसे बड़े विद्वान बने। उन्होंने जब बौद्ध मत व जैन मत के सिद्धान्तों का अध्ययन किया तो उन्हें ईश्वर के अस्तित्व को न मानने का सिद्धान्त असत्य व अनुचित लगा। **सत्य का प्रचार व असत्य का खण्डन ही मनुष्यों का कर्तव्य भी है और धर्म भी।** अतः इस धर्म का पालन करने के लिए उन्होंने तैयारी की। उन्होंने इन नास्तिक मतो के खण्डन के लिए अद्वैतवाद की विचारधारा को स्वीकार किया जिसके अनुसार संसार में केवल एक चेतन सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार तत्व–पदार्थ–सत्ता का ही अस्तित्व है जिसे ईश्वर–परमात्मा आदि नामों से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि हमें यह जो संसार दिखाई देता है वह हमारी बुद्धि के भ्रम के कारण दिखाई देता है जबकि उसका यथार्थ या वास्तविक अस्तित्व है ही नहीं। उन्होंने वा उनके अनुयायियों ने इसका एक उदाहरण दिया कि जैसे रात्रि के अन्धेरे में वृक्ष पर लटकी हुई रस्सी सांप प्रतीत होती है, ऐसे ही यह संसार हमें वास्तविक प्रतीत हो रहा है जबकि इसका अस्तित्व है ही नहीं। यह हमारा अज्ञान व भ्रम है। इसी प्रकार से उन्होंने सब प्राणियों को ईश्वर का ही अंश बताया और कहा कि इसका कारण अज्ञान है। अज्ञान जब दूर होगा तो जीव ईश्वर में समाहित होकर उसमें लीन हो जायेगा अर्थात् मिल जायेगा और तब जीव वा जीवात्मा का अस्तित्व नहीं रहेगा।

हमने भगवान बुद्ध व भगवान महावीर के ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के सिद्धान्त की चर्चा की है। ऐसा उन्होंने ईश्वर के बनाये या दिये गये ज्ञान वेद व इनके नाम पर हिंसा के व्यवहार के कारण किया था। **हमें लगता है कि इसके लिए यह आवश्यक था कि वेद के नाम पर यज्ञों में जो हिंसा होती थी उसका खण्डन किया जाता और वेदों का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया जाता। इसके साथ ही ईश्वर को सृष्टि, समस्त प्राणियों तथा वेद ज्ञान का रचयिता सिद्ध किया जाता। परन्तु ऐसा नहीं किया गया।** यह तो कहा गया कि ईश्वर का अस्तित्व है और उसे तर्कों से सिद्ध किया गया जिससे नास्तिक मत पराभूत हुए, परन्तु वेदों पर पशुओं की हत्या व हिंसा करने जो आरोप थे और जिस हिंसा की प्रेरणा ईश्वर ने वेदों के द्वारा की गई बताई जा रही थी, उनका खण्डन व वेदों के सत्य अर्थों का प्रकाश व उनका मण्डन नहीं किया गया। इस कारण ईश्वर व वेदों पर हिंसा की प्रेरणा करने के आरोप स्वामी शंकराचार्य जी के शास्त्रार्थ के बाद भी यथावत् बने ही रहे। क्या यह नहीं किया जाना था या इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी? हमें लगता है कि यह कार्य अवश्य किया जाना चाहिये था परन्तु स्वामी शंकराचार्य जी के अल्पकालिक जीवन व अन्य अनेक कारणों से सम्भवतः वह ऐसा नहीं कर सके थे। हमने इसके लिए अपने एक मित्र के साथ स्वामी शंकराचार्य जी के अनुयायी, एक उपदेशक विद्वान से भी चर्चा की। इससे हमें यह ज्ञात हुआ कि स्वामी शंकराचार्य जी ने यज्ञ में हिंसा उचित है या अनुचित, इस भीष्म प्रश्न पर ध्यान नहीं दिया अर्थात् इसकी उपेक्षा की। **इसका परिणाम यह हुआ कि यज्ञों के सत्य स्वरूप, उनका पूर्णतः अंहिसात्मक होना, का प्रचार न हो सका और जो चल रहा था वह प्रायः चलता रहा या कुछ कम हुआ।** इसी कारण वेदों का महत्व भी स्थापित न हो सका और उनका संरक्षण व रक्षा न हो सकी। **स्वामी दयानन्द के जीवनकाल सन् 1825–1883 तक आते–आते देश में वेदों की उपलब्धि प्रायः विलुप्ति व अप्राप्यता की सी हो गई थी जिसकी खोज महर्षि दयषनन्द ने अपने अद्भुत ब्रह्मचर्य के तप, विद्या व पुरूषार्थ से की। यदि वह, वह न करते जो उन्होंने किया, तो हमें लगता है कि वेद सदा–सर्वदा के लिए विलुप्त व अप्राप्य हो जाते। आज हमें वेद व उनके मन्त्रों के सत्य अर्थ उपलब्ध हैं, वह महर्षि दयानन्द के तप व पुरूषार्थ का परिणाम है और इसका पूर्ण श्रेय उन्हीं को है। मानव जाति के लिए यह कार्य इतना हितकारी हुआ है कि जिसकी प्रशसा के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। यदि वह यह कार्य न करते तो, ऐसी अवस्था में, सब मत–मतान्तरों की मनमानी चलती रहती।** उनके द्वारा वेदों की प्रमाणिक पाण्डुलिपियों की खोज, उनके पुनरूद्धार व सत्य व यथार्थ वेदार्थ अथवा वेद भाष्य से

thearyasamaj.org

पृष्ठ ६ का शेष

लोगों को ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान हुआ और साथ ही जीवात्मा, कारण प्रकृति व कार्य प्रकृति के भेद व अन्तर का पता भी चला। **महर्षि दयानन्द प्रदत्त यह त्रैतवाद का सिद्धान्त ही वास्तविक, यथार्थ, सत्य व निर्भ्रान्त सिद्धान्त है।** महर्षि दयानन्द द्वारा किए गये वेदों के भाष्य, वैदिक रहस्यों के उद्घाटन व सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के प्रकाशन से सभी मत–मतान्तरों में मिश्रित असत्य, अज्ञान व मिथ्या मान्यताओं व सिद्धान्तों का ज्ञान समाज में उद्घाटित हुआ। **हम समझते हैं कि यह महर्षि दयानन्द की संसार को बहुमूल्य व दुर्लभ देन है। इसके लिए महर्षि दयानन्द विश्व समुदाय की ओर से अभिनन्दनीय है।**

इस लेख में हम यह कहना चाहते हैं कि स्वामी शंकराचार्य जी ने नास्तिकता का खण्डन किया और ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप का अपनी विचारधारा के आधार पर मण्डन किया। देश, काल व परिस्थितियों के अनुरूप उनका यह कार्य बहुत सराहनीय था। इसके अतिरिक्त ईश्वर व वेदों पर पशु हत्या की प्रेरणा देने और पशु के मांस से यज्ञ करने का जो मिथ्या दोष, यज्ञकर्ताओं के मिथ्याज्ञान व स्वेच्छाचारिता के कारण, लगा था, उसका परिमार्जन स्वामीजी शंकराचार्य जी ने नहीं किया। सम्भवतः इसी कारण वेदों का समुचित संरक्षण भी उनके व बाद के समय में नहीं हो सका। वेदों पर लगाये गये वेदेतर मतावलम्बियों के मिथ्या अनेक दोषों का खण्डन, वेदों के सत्य अर्थों का प्रकाशन व वेदों के ईश्वर से उत्पन्न, हल काल में इनके प्रासंगिक, उपयोगी व अपरिहार्य होने का मण्डन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल में किया जिसके लिए वह सर्वतोभावेन प्रशंसा व अभिनन्दन के पात्र हैं। उन्होंने न केवल वेदों का पुनरूद्धार ही किया अपितु वेद मन्त्रों के सत्य अर्थों को प्रकाशित कर हमें प्रदान किया। उन्होंने विश्व के सभी मनुष्यों को उनके वेदार्थों की परीक्षा करने की व्याकरण की आर्ष प्रणाली, अष्टाध्यायी–महाभाष्य–निरूक्त पद्धति भी हमें प्रदान की है, जिसके लिए सारी मानवजाति इस सृष्टि के प्रलय होने तक उनकी कृतज्ञ रहेगी। आज यदि स्वामी शंकराचार्य जी होते तो वह निष्पक्ष व न्याय के पक्षधर होने के कारण महर्षि दयानन्द के कार्यों के सबसे बड़े प्रशंसक होते। इन्हीं शब्दों के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं।

सकते और न हि किस अक्षर के लिए तालु, जिह्वा, कण्ठ, नासिका आदि का उच्चारण में कैसे प्रयोग करना है, यह ही जान सकते हैं। इस स्थिति में ईश्वर का होना सत्य सिद्ध होने के साथ यह प्रमाण कोटि का विचार, मान्यता या सिद्धान्त है कि अक्षर, मात्राओं, शब्द, वाक्य वा भाषा का ज्ञान एवं अन्य सभी विषयों का ज्ञान जिसकी मनुष्य के जीवन के लिए अपरिहार्य आवश्यकता है, वह सत्य, चित्त, आनन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सषष्टिकर्ता ईश्वर से प्राप्त होता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि जिस ईश्वर व सत्ता ने इस संसार को बनाया है उसे भी तो विज्ञान व ज्ञान की आवश्यकता थी। ज्ञान क्योंकि भाषा में ही निहित होता है, अतः ईश्वर को भी अपने सभी कार्य करने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। यदि ऐसा न हो अर्थात् ईश्वर की अपनी भाषा न हो तो वह ज्ञानहीन ठहरेगा। तब इस संसार की रचना ईश्वर द्वारा कदापि सम्भव नहीं हो सकती, ऐसा हमारा अनुमान व विवेक कहता है। ईश्वर की वह भाषा कौन सी है तो इसकी एक ही सम्भावना है कि ईश्वर की भाषा वही भाषा "संस्कष्त" है जो उसने वेदों का मनुष्यों को ज्ञान देने के अवसर पर प्रयोग की है। हम इस विषय में सभी विद्वानों के विचार आमंत्रित करते हैं।

हमारे इस लेख का प्रयोजन यह बताना है कि प्रत्येक भाषा अपनी किसी पूर्व भाषा में अपभ्रंस के द्वारा या विकारों व सुधारों व कई भाषाओं का समन्वय कर बनाई जाती है। पीछे चलते चलें तो एक अनवस्था दोष आता है। वहां केवल एक ही भाषा होती है। वह भाषा वेदों की भाषा अर्थात् संस्कष्त है। वह संस्कष्त मनुष्यों द्वारा बनाई गई नहीं है। वह परमात्मा प्रदत्त भाषा है जिसका विस्तार पूर्वक उल्लेख पूर्व पंक्तियों में किया जा चुका है। हम आज भी देख रहे हैं कि सषष्टि को बने हुए लगभग 2 अरब वर्ष व्यतीत होन को हैं और इतनी लम्बी अवधि में, आज तक भी संसार के सभी मनुष्य संस्कष्त से उत्कष्ट भाषा नहीं बना सके। संसार की सभी भाषाओं में अनेक दोष हैं जिन्हें दूर नहीं किया जा सका परन्तु **संस्कष्त पहली भाषा होकर भी निर्दोष है।** **यही इस भाषा का अपौरूषेयत्व या ईश्वरत्व है। इस सिद्धान्त को मान लेने पर भाषा विषयक सभी प्रश्नों का समाधान हो जाता है। इसी के साथ हम यह आशा करते हैं कि सभी विद्वान व पाठक हमारे विचारों से सहमत होंगे। लेख को विराम देने के साथ हम विद्वानों से उनकी प्रतिकया आमंत्रित करते हैं।**

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

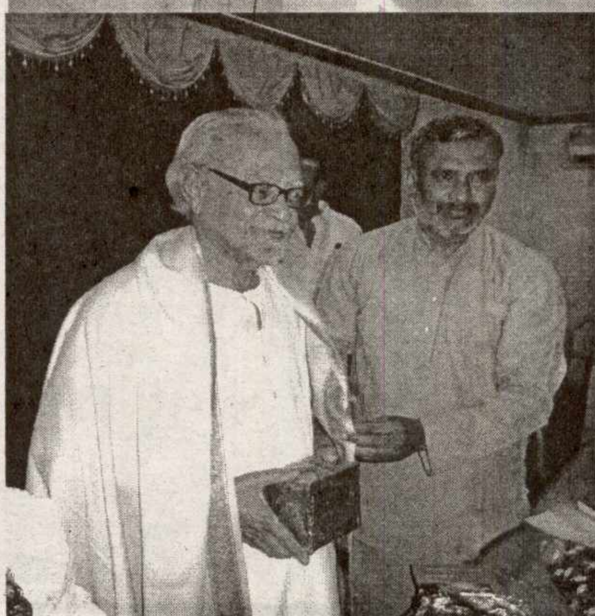

బుధవారం, 17 సెప్టెంబర్ 2014, హైదరాబాద్

మీర్ ఉస్మాన్ అలీఖాన్

సెప్టెంబర్ 17.. ఓ చారిత్రక దినం. తరతరాల రాచరిక పాలనకు చరమగీతి పాడిన రోజు. హైదరాబాద్ సంస్థానంలో స్వేచ్ఛా వాయువులు వీచిన రోజు. అవును.. 1948 సెప్టెంబర్ 17 నిజాం పాలన అంతమవడమే కాదు.. ప్రజాస్వామ్య పాలన ఆరంభమైన రోజు కూడా. నా తెలంగాణ కోటి రతనాల వీణ అన్నాడు మహాకవి దాశరథి. కోటి రతనాల వీణే కాదు.. నిలువెల్ల గాయాల కోన కూడా ఇది. తెలంగాణ దారిపొడవునా పారిన నెత్తుటి చారికలు కనిపిస్తాయి. రాచరిక పాలనను, రజాకార్ల అరాచకాలను, భూస్వాముల ఆగడాలను, వలస దోపిడీని, పీడనను ఎదిరించి నిలిచిన చరిత్ర తెలంగాణ సొంతం. త్యాగాల పునాదులపై స్వయం పాలనకు పాదులేసుకుంది తెలంగాణ. ఆపరేషన్ పోలో నాటి ఐదు రోజులు మిగిల్చింది విషాదమువునో కాదో కానీ..తెలంగాణ నేలపై తరువాత స్వేచ్ఛా వాయువులు వీచింది మాత్రం నిజం. భారత యూనియన్‌లో హైదరాబాద్ సంస్థానం విలీనమవడమే అందుకు నిదర్శనం. ఇది విలీనమేనా? లేదా విలీనం పేరిట జరిగిన విద్రోహమా? లేక విమోచనమా? అన్నదానిపై ఎన్నో వాదాలు.. ఎన్నెన్నో చర్చలు నేటికీ నలుగుతూనే ఉన్నాయి. వీటన్నింటినీ కాసేపు పక్కనపెట్టి 1948, సెప్టెంబర్ 13 నుంచి 17 వరకు ఏం జరిగిందో తెలుసుకుందాం..

రాచరికం నుంచి.. ప్రజాస్వామ్యంలోకి..

- ఆపరేషన్ పోలో పేరిట పోలీస్ యాక్షన్
- ఐదురోజుల మహత్తర పోరు
- నైజాం పాలన చివరి ఘడియలు
- భారత యూనియన్‌లో హైదరాబాద్ విలీన

15వ తేదీ నాటికి భారత సైన్యం హైదరాబాద్ వైపుకు దూసుకు వస్తోంది. మేజర్ ధనరాజులు నాయుడు సారథ్యంలో తూర్పు దిక్కు నుంచి వస్తున్న

రజాకార్ల సైన్యం

డంటూ ప్రచారం. మరోవైపు నుంచి దూసుకొస్తున్న భారత సైన్యం. చేష్టలుడిగిన నిజాం. మధ్యాహ్నం 12 గంటల ప్రాంతంలో నిజాం భారత ప్రతినిధి మున్షీకి వర్తమానం పంపి పిలిపించుకున్నారు. సాయంత్రం నాలుగు గంటల సమయంలో కింగ్ కోఠి రెసిడెన్సీలో నిజాం కలిసిన మున్షీకి పరిస్థితి అర్థమైంది. నిజాం ప్రధాని లాయాక్ అలీ రాజీనామాను మున్షీ చేతికిచ్చారు. ఏం చేయాలో పాలుపోవట్లేదన్నట్లు సందేహం వెలిబుచ్చారు. మున్షీ సలహా మేరకు నిజాం లొంగుబాటును అంగీకరించక తప్పలేదు. ఆ రోజు సాయంత్రం దక్కన్ రేడియోలో నిజాం లొంగిపోతున్నట్లు ఫర్మాణా చదివాడు. ఆ ప్రకటనతో ఒక శకం ముగిసింది. తరతరాల రాజరిక పాలన అంతమై ప్రజాస్వామం వైపు ప్రస్థానం ఆరంభమైంది.

ప్రజాస్వామ్యంలోకి...

సెప్టెంబర్ 18 మేజర్ జనరల్ జేఎన్.చౌదరి నాయకత్వంలో భారత సైన్యాలు హైదరాబాద్ నగరంలో ప్రవేశించాయి. నిజాం నియమించుకున్న తాత్కాలిక మంత్రివర్గాన్ని బర్తరఫ్ చేశారు. మిలటరీ గవర్నర్‌గా చౌదరి రాష్ట్ర పరిపాలనా బాధ్యతల్ని స్వీకరించారు. ఖాసీం రజ్వీ తదితర రజాకార్ నాయకులను నిర్బంధించారు. సైనిక న్యాయస్థానంలో రజ్వీపై విచారణ జరిగింది. టీటీనగర్ కేసు బహిరంగ విచారణలో రజ్వీకి జైలుశిక్ష విధిం

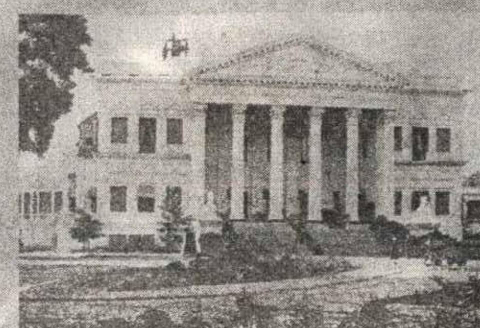

thearyasamaj.org

భారత సైన్యానికి ఎలాంటి ప్రతిఘటన లేకపోవడంతో సూర్యాపేట వరకు వచ్చింది. అక్కడ కొద్దిమంది ఎదురుపడ్డా నిలవలేకపోయారు. ఈ దశలో నిజాం ప్రధాని లాయక్ సైన్యాధికారిని మార్చాలని ఆలోచించారు. అదే సమయంలో కళ్యాణి బీదర్ రోడ్డు మీద భారత సైన్యం కదలికలు మొదలైనట్లు ప్రధాని లాయక్ అలీకి సమాచారం అందింది. దీంతో ప్రధాని భారత సైన్యాన్ని ప్రతిఘటించేందుకు రజ్వీ సైన్యాన్ని పంపాలని నిర్ణయించుకున్నాడు. వెంటనే నాలుగు బెటాలిన్‌లు పంపించారు. సెప్టెంబర్ 16 ఉదయం వరకు హైదరాబాద్‌కు భారత సైన్యం 25కిలో మీటర్ల దూరంలోకి వచ్చేసింది. హైదరాబాద్ సంస్థానంలో భారత యూనియన్ ప్రతినిధి అయిన కేఎం. మున్షీని కంటోన్మెంట్ నుంచి ప్రధాని నివాసం రాజ్‌భవన్ పక్కనే ఉన్న లేక్ వ్యూ అతిధి గృహానికి తరలించింది. మరోవైపు ఖాసీ రజ్వీ జన్నాన్ని రెచ్చగొట్టే ప్రసంగాలు ఇస్తున్నాడు. యుద్ధంలో నిజాం సైన్యం వాస్తవ స్థితిని మార్చి రేడియోల్లో ప్రసారం చేస్తున్నారు.

చివరి అంకం..

సెప్టెంబర్ 17 నాటికి పరిస్థితి పూర్తిగా చేయిదాటిపోయింది. ఒకవైపు నుంచి రజ్వీ పాకిస్తాన్ పారిపోయారు. 1957 వరకు శిక్ష అనుభవించిన రజ్వీ విడుదల తరువాత పాకిస్తాన్‌కు వెళ్లిపోయాడు. దేశంలోని ఇతర సంస్థానాధీశుల మాదిరిగానే భారత యూనియన్‌తో 1949 ఫిబ్రవరిలో నిజాం ఒక ఒప్పందం కుదుర్చుకున్నారు. ఆయన అనుభవిస్తున్న వ్యక్తిగత హక్కులన్నింటినీ కొనసాగిస్తామని భారత ప్రభుత్వం హామీ ఇచ్చింది. మేజర్ చౌదరి పాలనా బాధ్యతలు స్వీకరించడంతో నిజాం నామమాత్రపు అధినేతగా మారారు. అతడి సైనిక దళాలను రద్దు చేయడంతో పాటు.. అతడి ఆధీనంలో ఉన్న రాష్ట్రాన్ని భారత యూనియన్‌లో విలీనం చేసుకున్నారు. మిలటరీ పాలన రెండు సంవత్సరాలు కొనసాగింది. అనంతరం ఎంకే. వెల్లోడి ముఖ్యమంత్రిగా ప్రజా ప్రతినిధులను రాష్ట్రేతర సివిల్ అధికారులతో గూడిన ప్రభుత్వం 1950లో జూన్‌లో ఏర్పడింది. నిజాం రాజ ప్రముఖ్‌గా నియమించబడ్డారు. ఈ ప్రభుత్వం 1952 మార్చిలో సార్వజనీన ఎన్నికలు జరిగి ప్రజాతంత్ర ప్రభుత్వం ఏర్పడు వరకు పనిచేసింది.

జేఎన్ చౌదరితో నిజాం సైన్యాధిపతి ఎల్ ఎండ్రోస్

కింగ్ కోఠి రెసిడెన్సీ

కోఠి రెసిడెన్సీ నిజాం అధికారిక నివాసం. నిత్యం రాజసం ఉట్టిపడే ఈ భవనంలో సెప్టెంబర్ 17న విషాదం అలుముకుంది. అధికారం చేజారుతోందనే ఆందోళన నిజాంని ఉక్కిరిబిక్కిరి చేసింది. అధికార యంత్రాంగం, మంత్రులు రాజీనామాతో నిరాశ ఆవహించింది. వేగులు భారత సైన్యం చుట్టుముడుతోందన్న సమాచారాన్ని అందించారు. భవిష్యత్తు అంతుచిక్కక నిజాం ఆలోచనలో మునిగిపోయాడు. లొంగుబాటు తప్పదనే నిర్ణయాన్ని ఈ వేదిక నుంచే తీసుకోవడం గమనార్హం.

షా మంజిల్..

నేటి రాజ్‌భవనే నాటి షా మంజిల్. నిజాం ప్రధాని లాయక్ అలీ నివాసం. ఆ రోజు రాత్రి లాయక్ అలీ పరిస్థితి అగమ్య గోచరంగా ఉంది. నిద్రలేదు. భారత సైన్యాలు దూసుకొస్తున్నాయి. బీబీనగర్ వరకు వచ్చాయనే సమాచారం ఫోన్ ద్వారా అందింది. నిజాం లాయక్ అలీ నేతృత్వంలోని మంత్రి వర్గాన్ని రద్దు చేస్తాడని తెలియగానే ఆయనలో ఆందోళన మొదలైంది. చెమటలు పట్టాయి. లాయక్ అలీ నిజాం సామ్రాజ్యపు చివరి క్షణాలకు షా మంజిల్ వేదిక అయింది.

చివరి నిజాం ప్రధాని లాయక్ అలీ

ఇదీ నాటి స్థితి..

విస్తీర్ణం: 82,698 చదరపు మైళ్లు
జనాభా: 16.34 మిలియన్లు
హిందువులు: 85 శాతం
ముస్లిం: 12శాతం
(1941 సెన్సెక్స్ ప్రకారం)

thearyasamaj.org

సిటీబ్యూరో, టీ మీడియా

భారతదేశానికి 1947 ఆగస్టు 15న స్వాతంత్ర్యం లభించింది. కానీ హైదరాబాద్ సంస్థానం అప్పటికింకా రాజరిక పాలనలోనే కొనసాగుతోంది. బ్రిటీష్ వాళ్లు దేశాన్ని విడిచివెళ్లే నాటికి దేశంలో 565 సంస్థానాలున్నాయి. అన్ని సంస్థానాలు భారత యూనియన్‌లో విలీనమవడానికి సిద్ధమవగా అప్పటి నిజాం రాజు మీర్ ఉస్మాన్ అలీ ఖాన్ మాత్రం అందుకు ససేమిరా అన్నాడు. అప్పటికి హైదరాబాద్ సంస్థానంలో కర్ణాటక, మహారాష్ట్ర, తెలంగాణ

1948 సెప్టెంబర్ 12 అర్ధరాత్రి భారత సైన్యానికి ఆదేశాలు అందాయి. హైదరాబాద్ సంస్థానం సరిహద్దులో వాతావరణం వేడెక్కింది. దాడికి దళాలు కదం తొక్కాయి. హైదరాబాద్ సంస్థానాన్ని రెండువైపుల నుంచి ముట్టడించాలన్నది యూనియన్ సైన్యం పథకం. జనరల్ రాజేంద్ర సింహ్జీ ఆధ్వర్యంలో ఒక

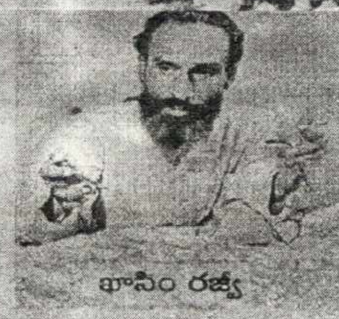

ఖాసిం రజ్వీ

నిజాం సైన్యం

ప్రాంతాలు కలిసి ఉండేవి. విశాలమైన భూభాగం, నిజాం ప్రభుత్వానికి సొంత ఆర్మీ, ఎయిర్‌లైన్, టెలీ కమ్యూనికేషన్ వ్యవస్థ, రైల్వే వ్యవస్థ, పోస్టల్, కరెన్సీ.. రేడియో బ్రాడ్‌కాస్టింగ్ సర్వీస్ ఉండేది. అంతటి వైభవోపేతమైన సంస్థానాన్ని భారత యూనియన్‌లో విలీనం చేయడం ఇష్టంలేని నిజాం ప్రభుత్వంతో కుదుర్చుకున్న తాత్కాలిక ఒప్పందాన్ని సైతం ఉల్లంఘించాడు. మరోవైపు పాకిస్తాన్‌తో సంబంధాలు కొనసాగించే ప్రయత్నం చేశాడు. అప్పటి గవర్నర్ జనరల్ లార్డ్ మౌంట్‌బాటన్ భారత ప్రభుత్వంలో హైదరాబాద్ సంస్థానాన్ని విలీనం చేసేందుకు రాజకీయ ప్రయత్నాలెన్ని చేసినా ఫలితం లేకపోయింది. మరోవైపు సంస్థానంలో రజాకార్ల అరాచకాలు పెరగడంతో భారత యూనియన్ నేరుగా రంగంలో దిగింది. ప్రధాని జవహర్ లాల్ నెహ్రూ, అప్పటి హోం మినిస్టర్ సర్దార్ వల్లభాయ్ పటేల్ హైదరాబాద్‌లోకి భారత సైన్యాన్ని పంపడానికి నిర్ణయించుకున్నారు.

పరిస్థితిని గమనించిన నిజాం భారత ప్రభుత్వం మధ్య నెలకొన్న వివాదాన్ని పరిష్కరించాలని కోరుతూ ఐక్యరాజ్యసమితిని ఆశ్రయించారు. నిజాం విదేశాంగ మంత్రి నవాబ్ మోయిన్ నవాబ్‌జంగ్ సారథ్యంలో ప్యారిస్ వెళ్లి 1948 ఆగస్టులో ఫిర్యాదు చేశారు. కానీ ఆ అవకాశం లేకుండా అనుకున్న దానికి ముందే భారత సైన్యం దూసుకొచ్చింది.

భాగం విజయవాడ మీదుగా, బీదర్ మీదుగా మేజర్ జనరల్ జేఎన్.చౌదరి ఆధ్వర్యంలో మరో బృందం బయలుదేరింది. వైమానిక దళాన్ని సిద్ధం చేసుకున్నారు. వినియోగించాలనుకున్నారు. 'ఆపరేషన్ పోలో' పేరిట జరిగిన ఈ పోలీసు చర్యకు అప్పటి భారత మిలిటరీ చీఫ్ జేఎన్.చౌదరి నాయకత్వం వహించారు. సెప్టెంబర్ 16 నాటికి భారత ప్రభుత్వం దాడులు ప్రారంభించవచ్చునుకున్న నిజాం సైన్యం ఆలోచనలను తారుమారు చేస్తూ సెప్టెంబర్ 13 నాటికే భారత సైన్యం దూసుకొచ్చింది. పశ్చిమ దిక్కు నుంచి ముట్టడికి ఎక్కువ దృష్టిపెట్టింది. సరిహద్దు ప్రాంతం నాల్‌దుర్గ్ దగ్గర నిజాం సైన్యం ప్రతిఘటిస్తుందనుకొని కొండలు అడవులు ఉండే ఆ ప్రాంతంలో భారత సైన్యం ముందే వైమానిక దాడులు చేసింది. నిజాం సైన్యం భారత సైన్యాన్ని ఎదుర్కొనేందుకు విశ్వ ప్రయత్నం చేసింది. నిజాం సర్వ సైన్యాధ్యక్షుడు జనరల్ ఎడ్రూస్ అవసరమైతే భారత సైన్యాన్ని ఆరునెలల పాటు ప్రతిఘటించగలమని గొప్పలు చెప్పుకున్నా యుద్ధంలో పరిస్థితి అందుకు పూర్తి భిన్నంగా మారింది. భారత సైన్యం యుద్ధ ట్యాంకర్లు, ఆధునిక ఆయుధాలతో దూసుకురావడంతో నిజాం సైన్యం, రజాకార్లు నిలవలేక పోయారు.

ఇండియన్ యూనియన్ సైన్యం

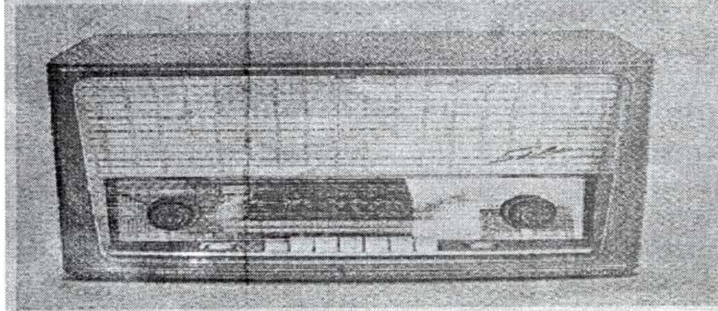

దక్కన్ రేడియో..

రెండు శతాబ్దాల అసఫ్‌జాహీల పాలన దక్కన్ రేడియో వేదికగా ముగిసింది. నిజాం సైన్యం లొంగిపోవడానికి గొంతు అందించింది. 'మారిన పరిణామాల నేపథ్యంలో 'మనం ఓడిపోయాం.. అంతా లొంగిపొండి' అంటూ నిజాం స్వయంగా రేడియో స్టేషన్‌లో ఫర్మానా చదివి వినిపించారు. దీంతో నిజాం సంస్థానంలోని సైనికులు, రజాకార్లు భారత ప్రభుత్వానికి తలొగ్గారు.

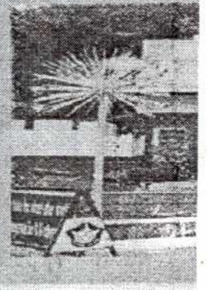

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

RNI.No.52990/93

16-10-2014

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభా ఆప్ర-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
phone No. 040 - 24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభా

हैदराबाद का मुक्ति संघर्ष

हैदराबाद का मुक्ति संघर्ष

दत्तात्रय जी (उमरी), राधाकृष्ण जी (निज़ामाबाद), श्यामलाल जी (हैदराबाद), विष्णु भगवान जी (ताण्डूर), शिवचन्द्र जी (हुमनाबाद), तथा वेदप्रकाश जी (गुंजोटी)।

डॉ. आनंद राज वर्मा

डॉ. आनंदराज वर्मा

17 सितम्बर 2014
मूल्य : रू. 120/-
Now at Rs. 80/- only

Now available in Hindi on concessional rate for only Rs. 80/- only. 280 pages book written by Dr. Anand Raj Varma and published by Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana. rate : Rs. 120/-

प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद तेलंगाना
महर्षि दयानंद मार्ग, सुल्तान बज़ार, हैदराबाद
फोन : 040 - 24753827, 24756983, 66758707, 09849560691
e-mail : acharyavithal@gmail.com

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद तेलंगाना

Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com
సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైద్రాబాద్-95 Ph.: 24558707, Email : aryavithal@yahoo.co.in.
संपादक: श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५